## MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS
contd.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY : Now we shall take up discussion on the Motion of Thanks on the President's Address. Shri Vithalrao Madhavsrao Jadhav will continue his speech.

**श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव** (महाराष्ट्र) उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसा कि मैंने कल कहा था अपने भाषण में, कि हमारी कांग्रेस शासन, प्रशासन जो चल रहा है उसकी क्या-क्या उपलब्धियां है। आज मैं आपको एक बात याद दिलाना चाहता हूं। कुछ दिन पहले मैं पढ़ रहा था कि महात्मा गांधी से किसी ने पूछा था कि आपके आदर्श भगवान राम ही क्यों हैं ? तो गांधी जी ने दो बातें कही थीं। उन्होंने कहा था कि भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम और मेरे आदर्श इसलिए हैं कि सौतेली मां को जो पिता ने वचन दिया था उसको निभाने के लिए वह 14 साल के लिए बनवास चले गए। अपने पिताजी के वचन का पालन करने वाले भगवान राम महात्मा गांधी के आदर्श थे। दूसरी बात उन्होंने कही राजा वह होता है, अगर कोई उस पर सामान्य मनुष्य भी, बहुत ही कमपुवत घटक भी किसी तरह का इल्जाम लगाता है तो उसके अनुसार उसको चलना पडता है और जब सीताजी पर इल्जाम लगाया गया तो उन्होंने उसका त्याग कर दिया। यह दो बातें हैं, जिनमें भगवान राम मेरे आदर्श हैं। आज उसी मर्यादा पुरुषोत्तम का नाम लेकर भारत में हमारी भारतीय जनता पार्टी और कई लोग, शिवसेना वगैरह लोगों के दिलों में जहर पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। इसको रोकना भारत की जनता का प्रथम कर्त्तव्य बनता है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, एक बात उन्होंने यह भी कही थी कि दुर्बलों की अहिंसा अर्थहीन होती है। यही कारण है, कल मैं साइंस और टेक्नोलोजी पर जब बात कर रहा था कि भारत ने इसमें बहुत प्रगति की है। हमने अग्नि मिसाइल तैयार कर के दुनियां को दिखा दिया है कि भारत इस ज्ञान में, साइंस और टेक्नोलोजी में दुनिया के किसी भी देश से पीछे नहीं है क्योंकि गांधी जी ने यह कहा था कि दुर्बलों की अहिंसा अर्थहीन होती है। इसलिए यह हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि हमारे देश के पास सारे शस्त्रों, सारे आर्मस का ज्ञान रहना चाहिए। मैं साइंस और टेक्नोलॉजी में पहले से सदस्य रह चुका हूं, जब इन्दिरागांधी जी उसकी अध्यक्ष थीं। राजीवगांधी भी अध्यक्ष रहे। सारे प्रधानमंत्री उसके अध्यक्ष रहते हैं। राजीव जी ने बढ़ावा दिया था मास टैक्नोलोजी को। यह जो छोटी-छोटी बातें जो टैक्नोलोजी में होती हैं, इन्हें आम लोगों की तरफ कैसे ले जाएं, प्रयास किया था। इस चीज में मैं एक बात जरूर करना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के एक सदस्य हैं, मैं उनकी बहुत सराहना करता हूं, डॉ० नौनिहाल सिंह जी की। नौनिहाल सिंह जी अभी विदेश से एक टैक्नोलोजी लाए हैं सूर्य प्रकाश से, सूर्य किरण से और समुद्र की लहरों से विद्युत की निर्मिती कैसे की जाए और उन्होंने एक जो किताब लिखी है, जो मुझे भी परजेन्ट की है। अभी कुछ दिन पहले उन्होंने तमिलनाडु में उस एक प्रकल्प का उद्घाटन भी किया है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, कोई किसी भी पार्टी का सदस्य क्यों न हो, मगर देश के प्रति जो काम करता है, उसकी मैं पूरे हृदय से सराहना करना चाहता हूं। इस प्रकार की टेक्नोलोजी और एक टेक्नोलोजी नो-हाऊ जब तक आम जनता की तरफ नहीं जाएगी तब तक इस देश का विकास नहीं होगा। इस टेक्नोलोजी में इतनी ताकत है कि इसमें कुछ पोल्यूशन नहीं होता, कुछ खर्चा भी कम होता है और इस तरह समुद्र की लहरों और सूर्य प्रकाश से विद्युत निर्मिती करने से सात हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन हमारे देश में हो सकता है। यह टेक्नोलोजी दुनिया के अंदर और हमारे देश के अंदर उपलब्ध है। इसकी तरफ हमारी सरकार द्वारा बहुत गंभीरता से सोचने की मैं जरूरत महसूस करता हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, यही बात नहीं है। हमारे प्रधानमंत्री जी श्री पी० वी० नरसिंहराव जी कुछ दिन पहले डावोस गए थे और मुझे बड़ा अभिमान है, गर्व है, फक्र है कि हमारे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार भी वहाँ गए थे। . . . .

गए काफी प्रपोजल लेकर गए थे, वे कोई दूर करने के लिए नहीं गए थे और वहाँ से भी यह मैसेज मिला है कि महाराष्ट्र के अंदर एक लाख दस हजार करोड़ के नए उद्योग लगने जा रहे हैं। देश में एक नया वातावरण तैयार हुआ है, एक नई औद्योगिक क्रांति होने की संभावना है। जब मैं स्टूडेंट था उस वक्त मैंने देखा, यशवन्त राव चव्हाण हमारे महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री थे, उन्होंने कहा था कि कृषि-औद्योगिक समाज व्यवस्था की निर्मिती जब तक भारत में नहीं होगी तब तक हमारा भारत शक्तिशाली और बलशाली नहीं होगा और वही सपना बचपन से लेकर आज तक हम देखते आ रहे हैं। कृषि-औद्योगिक क्रांति तो हो रही है, मगर औद्योगिक क्रांति ज्यादा हो रही है और कृषि की क्रांति कम हो रही है। हम औद्योगिक क्रांति को कृषि-औद्योगिक क्रांति में जब तक बदल नहीं देंगे तब तक 70 प्रतिशत जनता, 60 करोड़ जनता, जो गांव में रहती है, उसका सवाल कैसे हल करेंगे, यह हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल है। मुझे बड़ी खुशी है कि हमारे पायलट साहब यहां बैठे हैं, वे किसानों के नेता हैं और काफी किसानों के मेले में उन्होंने भाषण भी दिए हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के माध्यम से सिर्फ यह आरग्यू करना चाहता हूं कि हमारे देश में 56 या 60 करोड़ लोग कृषि पर निर्भर है और हमारा जो कृषि का क्षेत्र है, अमरीका से 1/3 है और अमरीका में एक करोड़ पिचहत्तर लाख लोग कृषि पर निर्भर है। मैं यह नहीं कहता कि सिर्फ एक करोड़ पिचहत्तर लाख लोग ही कृषि पर रहें, मगर हमारी कृषि की जो केपेसिटी है, हमारी खेती की जो केपेसिटी है, वह हमारी जो अभी पापुलेशन है, जो जन-संख्या है, वह सिर्फ 1/4 रख सकती है। अगर 60 करोड़ है तो 15-20 करोड़ लोग अभी भी खेती में काम कर सकते हैं। अभी हमने सीलिंग कानून बनाया, यह सब लाए और कृषि में क्रांति करने की कोशिश की, मगर हमको उसकी तरफ.. (समय की घंटी) .. उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने कल ही डिप्टी चेयरमैन से दस मिनट मांग के लिए हैं।.... (व्यवधान) ...

The Deputy Chairman has allowed me to speak for ten minutes today. I assure you, Sir, that I will not violate the time-limit.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) : I will tell you one thing. There are 18 speakers from the Congress party. And, we have only about two hours. All the remaining Members have to be accommodated. Kindly be brief.

**श्री विठ्ठलराव माधवराव जाधव** : महोदय, यह बहुत जरूरी है कि कोई नया ऐसा कानून बनाया जाए या ऐसी योजना बनाई जाए कि कृषि पर हम कितना भार रखने वाले हैं, हमारी कितनी पॉपुलेशन कृषि पर रहनी चाहिए। हमारी खेती का, हमारा जो फार्म साइज है

What should be the size of the farm ? We must decide it once and for all In respect of both dry-farming and irrigated—farming

और उसी तरीके से जब तक हम नहीं चलेंगे तो हमारी कृषि के बारे में भी जो तरक्की होनी चाहिए, वह नहीं हो सकती। एक किसान होने के नाते मेरा यह केन्द्र सरकार को सुझाव है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसे कि मैं काफी बोल भी चुका हूं, मगर अब मैं महाराष्ट्र की तरफ आता हूं। हमारे महाराष्ट्र की कुछ बातें हैं। एक बहुत पुराना मसला था हमारे महाराष्ट्र में मराठवाड़ा विद्यापीठ को डॉ० बाबा साहब अम्बेडकर का नाम देने का, वह 15 साल से चलता आ रहा था। महाराष्ट्र की विधान सभा में और विधान परिषद् में उसके बारे में प्रस्ताव पास हुआ था। हमारे महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने एक हिम्मत दिखाई और डॉ० बाबा साहब मराठवाड़ा विद्यापीठ उसका नामकरण कर दिया। यह एक बहुत बड़ा हमने कदम उठाया है, यह समाजवादी कदम है। यह कदम उठाने के बावजूद भी देश में जो सामाजिक क्रांति का आन्दोलन चला है, उसको दिशा-निर्देश महाराष्ट्र ने दिया है। छत्रपति शिवाजी महाराज, से लेकर महात्मा ज्योति फूले व साहू महाराज तक, इन्होंने समाजिक क्रांति की दिशा महाराष्ट्र और देश को दिखाई है। मगर हमारे यहां उत्तर भारत में एक नए नेता उभर कर आए है जिनका नाम

है–कांशी राम, वे कांशी राम जी कहते हैं कि सारी जाति-पाति की व्यवस्था मोड़ दो। हम भी चाहते हैं कि मुड़े, मगर कैसे मुड़े–मारो, तोड़ो, मोड़ो छोड़ो, यह कह रहे हैं। वे डा० बाबा साहब अम्बेडकर को भी गालियां देते हैं, मुझे समझ नहीं आता कि वे डा० बाबा साहब अम्बेडकर को समझते हैं या नहीं। मुझे यह भी नहीं पता कि हिन्दुस्तान में कितनी जातियां हैं, मैं जात-पात में विश्वास नहीं करता, मैं तो कोई धर्म में भी विश्वास नहीं करता हूं। जैसा कि हमारे गांधी जी और दूसरे लोगों ने कहा है कि मानवता ही एक धर्म है और मानवता ही एक धर्म होना चाहिए। हमारे सामने तो जो गरीब हैं, उसको कैसे ऊपर उठाया जाए, यह बात है। जिनके पास नहीं है उनको ऊपर उठाने की बातें और इसी रास्ते से कांग्रेस आज तक चलती आई है। दूसरी बात, जो हमारी महाराष्ट्र सरकार ने की है, हमारे मुख्य मंत्री शरद पवार ने एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। इसी सदन के अंदर मैं एक नॉन ऑफिशियल बिल लाया था जिसमें मराठवाड़ा, विदर्भ और ईस्टर्न पार्ट ऑफ महाराष्ट्र के लिए वैधानिक विकास मंडल–स्टेट्यूटरी डवलपमेंट बोर्ड की स्थापना करनी चाहिए। यह सवाल हमने उठाया था और सारी पार्टियों ने उसका समर्थन किया था। उससे पहले डा० बापू कालदाते भी एक नॉन ऑफिशियल रिजोल्यूशन लाए थे। उस वक्त भी सारी पार्टियों ने उसका समर्थन किया था। केन्द्र सरकार की केबिनेट में उसका निर्णय हो चुका है और महाराष्ट्र में वैधानिक विकास मंडल के बारे में फैसला हो गया है। यह भी हमारी दृष्टि से, पिछड़े हुए लोगों की दृष्टि से एक बहुत अच्छा कदम उठाया है हमारे पी० वी० नरसिह राव की सरकार ने। इसलिए मैं उनको हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूं, बधाई देना चाहता हूं। इसी तरह हमारे महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री शरद पवार ने जिन्होंने इतना काम किया, कॉमन आदमी के मन में, एक सामान्य मनुष्य के मन में अपना आत्म-विश्वास जगाया उसके लिए इस सदन के माध्यम से मैं उनको भी, धन्यवाद देना चाहता हूं, उनका अभिनन्दन करता हूं। (समय की घंटी)

उपसभाध्यक्ष महोदय; इतनी ही बात नहीं, महाराष्ट्र में जो चल रहा है, जैसा देखिए महाराष्ट्र और अन्य राज्यों की तुलना में महाराष्ट्र का पर-केपिटा इन्कम सबसे ज्यादा है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा इंडस्ट्रीज हैं। यह नहीं कि हम बहुत ज्यादा लेकर जा रहे हैं, यह बात नहीं है। यह महाराष्ट्र का आम आदमी है; महाराष्ट्र का कॉमन सिटीजन है, वह बहुत काम करने वाला है। वह बहुत काम करता है और हमेशा सोचता है कि वह आगे कैसे बढ़े। मैं यह नहीं कहता कि सत्-प्रतिशत् लोग ऐसे हैं। हमारे मराठवाड़ा, विदर्भ के कुछ पिछड़े हुए इलाके ऐसे हैं जैसा उत्तर प्रदेश और बिहार के पूर्वी-उत्तर प्रदेश या बिहार के कुछ हिस्से पिछड़े हुए हैं और उसके विकास के लिए वह वैधानिक विकास मंडल बनाया है। यह बहुत ही सराहनीय बात है। इतना ही नहीं, मैं यही कहूंगा जैसा कि मैंने कल कहा कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर सब का या राज्यसभा सदस्यों का आखिरी भाषण है इसलिये मैं सिर्फ यही शुभ-कामनाएं करता हूं कि हमारा देश बड़ा बने, क्योंकि मैं जबसे राजनीति में आया और कांग्रेस में आया तथा तब से कांग्रेस में ही रहा हूं। मैंने जीवन में कभी अन्य कोई पार्टी नहीं बदली और मैं हमेशा इंदिरा जी के सिद्धान्तों पर, महात्मा जी के सिद्धांतों पर, राजीव जीके साथ और आज नरसिह राव जी के साथ डट कर खड़ा हूं; क्योंकि हम चाहते हैं कि सिर्फ मजबूत नेतृत्व ही देश की तरक्की कर सकता है।.... (व्यवधान)

**श्री मोहम्मद सलीम** (पश्चिम बंगाल) : बहुत कम लोग हैं ऐसे।

**श्री विठ्ठलराव माधवराव गाडगे** : सुनिए, जिन्होंने कुछ काम किया ही नहीं है उनको बोलने का कोई अधिकार है ही नहीं।.... (व्यवधान) कांग्रेस के नेतृत्व ने आज तक देश को मजबूत बनाया है, देश की आर्थिक व्यवस्था को मजबूत बनाया है, देश की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाया है। सिर्फ मैं इतना ही कहना चाहता हूं सदन के माननीय सदस्यों को, जो मेरे मित्र हैं:

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर के पहले,

खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।"

इसी के साथ मुझे जो आपने भाषण करने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। जय हिन्द, जय भारत।

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal) : Mr. Chairman, I would begin by saying that the President's Address to Parliament has been continuing as a custom since the adoption of the Constitution. The former President of India, Shri R. Venkataraman, had raised a question and it is on record, that this exercise is becoming meaningless. To me also, Sir, It appears that this customary exercise of President's Address to Parliament is a meaningless exercise. It does not reflect practically the mind of the individual President. It is the policy of the Government which the President reads out in Parliament on behalf of the Government. Sir, I feel that this custom should be dispensed with and there is ' need for it. Within a few days, discussion on the Budget will take place and during discussion on the Budget, the Members will be able to express their views on certain points and express their views about the Government's performance and every thing under the sun can be discussed if the Budget. So, this exercise, which has been continuing in the country since the adoption to the Constitution should be dispensed with so that Parliament can take up other serious matters. Sir, first of all, I would say that there is nothing except praising the performance of the Government in the President's Address; otherwise, there is a dismal situation. The speech is full of praise. He has praised, a number of times, the performance of the Government saying that it is bettering the image of the country, it is improving the economic situation, administration is being toned up, the communal situation is improving and so on and so forth. The speech is full of praise of the Government's functioning. The point is, the President has made the speech on behalf of the Government. What is this Government ? In May, 1991 when the general elections took place, at that time this Government, Narasimha Rao Government, was a minority Government. After 2-1/2 years without any election, without any mandate on paper, this Government has become a majority Government. Perhaps, this is the most wonderful performance of the Government, that a minority Government has been converted into a majority Government during this period of 2-1/2 years. I admit, without any popular vote, without any popular mandate, no other country in the whole world has achieved this success like Narasimha Government ! How ? Without any election, without any mandate, how can a minority Government be converted into a majority Government ? It is a new tactic that Mr. Narasimha Rao and his Government are following. Perhaps, the whole world is looking at the Government. So let us dispense with elections and depend upon suit cases and depend on money so that a minorty can be converted into a majority.

PROF. SAURIN BHATTACHARYA : What is the size of the suit case ?

SHRI SUKOMAL SEN : The size is very big.....(*Interruptions*)....It depends upon the buying capacity, it depends upon the seller and all that. Sir, this dependence on money power, replacing popular opinion, popular mandate,—isn't it the biggest achievement of this Government ? Unfortunately, Rashtrapatiji has not mentioned about it. I expected of Rashtrapatiji that he would mention it. The whole world is watching as to how a minority Government can become a majority Government. All the Governments—the British Government, the U.S. Government, the German Government—could have taken a lesson from India. It is the only science, the only tactic that has been innovated or we have discovered.

Now this Government lives on corruption ....(*Interruptions*)....We will discuss this point at the time of Dunkel. Sir, this Government lives on corruption. This President's Address is full of praise of the Government's performance. Corruption is another field in which the Government has succeeded. Sir, right from Bofors, ....(*Interruptions*).... Please listen to it. When it is unpalatable, not every tasty for you,.... (*Interruption*).....

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SURFACE AND TRANSPORT SHRI JAGDISH TYTLER : The whole world is praising the country.

SHRIMATI SARALA MAHESHWAR (West Bengal) : Country is not Congress.

SHRI SUKOMAL SEN : Sir, right from Bofors, it started in the regime of Rajiv Gandhi. Several years have passed. The Swiss Government, the Cantonal Court wanted to assist. Till now, the Bofors scandal is not unearthed. And for what ? Sir, not only Bofors but other scandals also have put the country to shame. After Bofors, the next scandal is the Bank Scam. The Bank Scam is, perhaps, an other feat of the new economic policy, another experiment, liberalisation, structural reforms and so on. Corruption is rampant in banking system also. Sir, a Committee of 30 Members, half from the Congress party and half from the Opposition, was constituted to go into it. That Committee made a general recommendation and it was placed before the Parliament. But what happended ? It looked as if the Committee Members themselves and committed some sin. The thief was sought to be caught. The thief was caught. But the thief was praised and the policement, who tried to catch the thief, were blamed. What fate did the JPC report meet ?

What was the action taken by the Government on the JPC report ? It was ridiculed in the Parliament. It was mucked at in the Parliament. It was condemned in the Parliament and no follow up action was taken. The Finance Minister should have gone. When the Finance Minister tendered his resignation after the JPC report came out, one reporter came and asked, "What is reaction ?" I told him, "It is a mockery. It is a drama. He is not going to resign."

THE VICE -CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) : Mr. Sen, we have to adjourn for lunch. You can continue after lunch. The House stands adjourned for lunch till 2.30 p.m.

The House then adjourned for lunch at thirty-one minutes past one of the clock.

The House re-assembled after lunch a thirty-five minutes past two of the clock.

The Vice-Chairman (SHRI V. NARAYANA SAMY) in the Chair.

MOTIO OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS CONTD.

**श्री ईश दत्त यादव** (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, कोई मिनिस्टर तो है नहीं । इसलिये मेरा अनुरोध यह है कि हाउस को एडजर्न कर दे और सरकार को कड़ा निर्देश दें कि जब यह सदन बैठे, उससे पहले ही मंत्री लोग यहां मौजूद रहा करें । यह सदन का सबसे बड़ा उपहास है ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) A Minister has come... (*Interruptions*)

**श्री ईश दत्त यादव** : माननीय उपसभाध्यक्ष जी इस सदन का बहुत उपहास किया जाता है ।

THE VICE CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) You raised it when no Minister was here. Now a Minister has come...(*Interruptions*)

**श्री ईश दत्त यादव** : नहीं सर, ठीक है कि मंत्री जी आ गये, यह उनकी मेहरबानी है । लेकिन यह प्रायः देखा जाता है कि कोई मंत्री यहां नहीं रहता और न किसी की दिलचस्पी रहती है । यह उच्च सदन है, इसलिये मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप कड़ा निर्देश प्रधानमंत्री को भेजें कि भविष्य में मंत्री लोग यहाँ पर उपस्थित रहा करें ।

THE VICE-CHAIRMAN SHRI V. NARAYANASAMY) : No, it is not like that, Most of the Ministers are here... (*Interruptions*) Two Ministers are here now. There is no need to give a direction. Now, Shri Sukomal Sen to continue his speech.

SHRI SUKOMAL SEN : Sir, when the President's Address is being discussed in the House, the Ministers should be present in the House. The Government should have some respect for the President at least. Unfortunately, they don't have any respect even for the President of the country.

Sir, I was speaking about corruption and how the Government indulges in corruption